नव भारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

गंभीर चुनौती है लगातार जल संकट का बढ़ना

देश इस समय भीषण गर्मी और जल संकट की दोहरी चुनौती से जूझ रहा है. शहरों से लेकर गांवों तक पेयजल की समस्या गहराती जा रही है. यहां तक कि इंदौर जैसे शहर में भी जल संकट विकराल हो गया है जहां, नर्मदा का जल पर्याप्त मात्रा में आता है. केंद्रीय जल आयोग के ताजा आंकड़े चिंता बढ़ाने वाले हैं. देश के 166 प्रमुख जलाशयों में 2 अप्रैल को जहां 85.698 बीसीएम पानी उपलब्ध था, वहीं 21 मई तक यह घटकर 60.830 बीसीएम रह गया. यानी महज सात हफ्तों में जल भंडारण में भारी गिरावट दर्ज की गई है. अब इन जलाशयों में कुल क्षमता का केवल 33.14 प्रतिशत पानी बचा है. यह स्थिति बताती है कि आने वाले दिनों में जल प्रबंधन देश के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बनने वाला है.

हालांकि राहत की बात यह है कि मौजूदा जल भंडारण पिछले वर्ष की तुलना में बेहतर है. बीते साल 21 मई को इन जलाशयों में 54.337 बीसीएम पानी था, जबकि दस वर्षों का औसत 48.901 बीसीएम रहा है. इसका अर्थ यह है कि स्थिति फिलहाल नियंत्रण में दिखाई देती है, लेकिन तेजी से घटते जल स्तर को हल्के में नहीं लिया जा सकता. खासतौर पर तब, जब मौसम विभाग और विशेषज्ञ अल-नीनो के प्रभाव को लेकर पहले ही आशंका जता चुके हैं. यदि मानसून सामान्य से कमजोर रहा, तो जल संकट और गंभीर हो सकता है.

सबसे अधिक चिंता नदी बेसिनों की स्थिति को लेकर है. कृष्णा बेसिन केवल 18.04 प्रतिशत पर पहुंच चुका है. गंगा बेसिन 44.64 प्रतिशत और महानदी 36.84 प्रतिशत पर है. यह आंकड़े स्पष्ट संकेत देते हैं कि देश के कई हिस्सों में सिंचाई, पेयजल और बिजली उत्पादन पर दबाव बढ़ सकता है. मध्यप्रदेश सहित कई राज्यों में लू का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है. खजुराहो और नौगांव में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंचना सामान्य मौसम परिवर्तन नहीं, बल्कि जलवायु संकट की गंभीर चेतावनी है.

असल समस्या केवल कम बारिश नहीं है. जलाशयों की संग्रहण क्षमता भी लगातार घट रही है. गाद जमने, वनों की कटाई, जलग्रहण क्षेत्रों के क्षरण और प्राकृतिक जल मार्गों में अवरोध जैसी समस्याओं ने स्थिति को और जटिल बना दिया है. यदि समय रहते इन कारणों पर ध्यान नहीं दिया गया, तो हर वर्ष गर्मियों में यही संकट और विकराल रूप में सामने आएगा. जाहिर है जल संकट का एक बड़ा कारण जल कुप्रबंधन भी है. खासतौर पर स्थानीय निकाय और पंचायती राज संस्थाएं जल प्रबंधन के संदर्भ में पूरी तरह से नाकाम रही हैं. यह भी चिंताजनक है कि जल आपूर्ति का 30 फ़ीसदी हिस्सा या तो लीकेज के कारण या अन्य गड़बड़ियों के कारण व्यर्थ बह जाता है. इधर, हालांकि यह भी सच है कि देश में जल संरक्षण को लेकर योजनाएं बनीं, लेकिन उनका प्रभाव जमीन पर सीमित दिखाई देता है. आज आवश्यकता केवल नए बांध बनाने की नहीं, बल्कि मौजूदा जलाशयों की क्षमता बढ़ाने, वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाने और स्थानीय जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने की है. गांवों के तालाब, कुएं और पारंपरिक जल संरचनाएं कभी भारत की जल सुरक्षा का आधार थीं. आधुनिक विकास की दौड़ में इन्हें उपेक्षित कर दिया गया.

अब समय आ गया है कि जल संकट को केवल मौसमी समस्या मानने की भूल बंद की जाए. यह राष्ट्रीय सुरक्षा, कृषि अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिरता से जुड़ा प्रश्न बन चुका है. सरकारों के साथ समाज को भी पानी बचाने की संस्कृति अपनानी होगी. क्योंकि आने वाले वर्षों में पानी केवल संसाधन नहीं, बल्कि अस्तित्व का सबसे बड़ा आधार बनने वाला है.

दुनिया को मार्गदर्शित करेगा भारत राष्ट्र

सी.पी. राधाकृष्णन

> हमने यह लक्ष्य निर्धारित किया है कि 2047 तक, यानी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक, भारत एक अग्रणी वैश्विक शक्ति बने और दुनिया का मार्गदर्शन करने की स्थिति में पहुंचे .कठिन परिश्रम का यह दौर ही अमृत काल है .जिस प्रकार हर स्वतंत्रता सेनानी के हृदय में आजादी की प्यास थी, उसी तरह आज के युवाओं के मन में राष्ट्र विकास का संकल्प होना चाहिए .इस अमृत काल में यदि युवाओं के विचार और प्रयास देशभक्ति, उच्च आदर्शों और श्रेष्ठ चरित्र के साथ आगे बढ़ेंगे, तब हम 2047 में एक विकसित भारत का सपना साकार होते देख सकेंगे .स्वामी विवेकानंद के ये शब्द हमें प्रेरणा देते हैं और दिशा भी दिखाते हैं- मेरे भाइयों, आइए हम सब मिलकर कड़ी मेहनत करें .यह सोने का समय नहीं है .भारत का भविष्य हमारे प्रयासों पर निर्भर करेगा .आइए हम सब मिलकर अपनी कड़ी मेहनत से एक विकसित भारत का निर्माण करें .

जब मैं तिरुप्पुर के स्कूल में पढ़ता था, तब मेरे मन में देश को लेकर कई सपने थे.मेरे मन में अक्सर ये सवाल उठते थे- भारत अपनी महानता कब वापस पाएगा? विश्व मंच पर एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में कब उभरेगा? हमारे गरीब और वंचित भाई-बहनों को सम्मानजनक जीवन कब मिलेगा? मुझे खुशी है कि किशोरावस्था में मेरे मन में जो विचार थे, वे अब साकार हो रहे हैं. मैं अक्सर खुद को स्वामी विवेकानंद के इन शब्दों की याद दिलाता था, उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको. तमिलनाडु की धरती से स्वामीजी के दिए ये शब्द हर व्यक्ति में देशभक्ति और समर्पण की भावना जगाने की अपार शक्ति रखते हैं.

मेरा हमेशा यह विश्वास रहा कि जब भारत अपनी पूरी क्षमता के साथ आगे बढ़ेगा, तब वह पूरी दुनिया का मार्गदर्शन करने वाला राष्ट्र बनकर उभरेगा.पिछले एक दशक में मुझे यह देखकर खुशी होती है कि हमारा देश जबरदस्त ऊर्जा और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है.अब हमें अपनी आंखों के सामने तिरुवल्लुवर के इन शब्दों की सच्चाई देखने का अवसर मिल रहा है-जो अपने संकल्प में अडिग रहते हैं, वे ठीक वही हासिल करते हैं, जिसकी उन्होंने कल्पना की होती है.हम देख सकते हैं कि हमारा देश तेज़ी से आगे बढ़ रहा है.पिछले एक दशक में भारत ने जो प्रगति हासिल की है, उसने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है.ऐसे समय में, जब पूरी दुनिया आर्थिक मंदी और अनिश्चितताओं से जूझ रही है, भारत की अर्थव्यवस्था मज़बूती और तेज़ी से आगे बढ़ रही है.इस दौर को निरंतर विकास का युग बनाने के लिए सरकार और जनता, दोनों का साझा उत्साह ही इस प्रगति का कारण है.

एक समय कमजोर अर्थव्यवस्था माने जाने वाला हमारा देश आज दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और जल्द ही तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है.सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारा आर्थिक विकास समावेशी रहा है.पिछले एक दशक में लगभग 25 करोड़ भारतवासी अत्यधिक गरीबी से बाहर निकलकर सम्मानपूर्ण जीवन जीने में सक्षम हुए हैं.अब तक भारत में गरीब और बेघर लोगों के लिए लगभग 4 करोड़ पक्के घर बनाए जा चुके हैं.12 करोड़ से अधिक लोगों को पाइप से पीने के पानी का कनेक्शन उपलब्ध कराया गया है.हमने खुले में शौच से मुक्त राष्ट्र बनने का संकल्प लिया था और केवल 60 महीनों के भीतर देश ने 60 करोड़ लोगों के लिए यह लक्ष्य हासिल कर दिखाया.प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत 80 करोड़ लोगों को हर वर्ष 5 किलोग्राम खाद्यान्न मुफ्त दिया जा रहा है, जिस पर 2.3 लाख करोड़ रुपये का खर्च किया जा रहा है.मैंने बचपन से ही गांवों में लोगों को इलाज की सुविधा न मिलने के कारण परेशान होते देखा है.उनके परिवारों की पीड़ा देखकर मुझे दुख होता था.आज देश इस संकल्प के साथ आयुष्मान भारत योजना चला रहा है कि स्वास्थ्य सेवाएं हर व्यक्ति तक पहुंचें.इसी का परिणाम है कि अब 44 करोड़ से अधिक लोगों को प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना के तहत 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा कवर मिल रहा है.केवल पिछले एक वर्ष में ही 2.5 करोड़ लोगों ने इस योजना के अंतर्गत मुफ्त इलाज प्राप्त किया है.

हमारे किसानों ने अपनी मेहनत से 35 करोड़ टन खाद्यान्न उत्पादन किया है, जिससे भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक देश बन गया है.भारत अब चावल उत्पादन में भी दूसरा सबसे बड़ा देश बन चुका है और अपने निर्यात के माध्यम से दुनिया से जुड़ रहा है.प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत अब तक 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे किसानों के बैंक खातों में भेजी जा चुकी है.आज हमारी नारी शक्ति के लिए देश के विकास में पूरी भागीदारी के अवसर खुल रहे हैं.3 करोड़ से अधिक महिलाएं लखपति दीदी और नमो ड्रोन दीदी बन चुकी हैं.कृषि, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान एवं तकनीक से लेकर अंतरिक्ष तकनीक तक, महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है.अब महिलाएं सशस्त्र बलों में स्थायी कमीशन भी प्राप्त कर रही हैं और युद्धक भूमिकाओं में भी भाग ले रही हैं.नारी शक्ति वंदन अधिनियम संसद और राज्य विधानसभाओं में उनकी भागीदारी को और मजबूत करेगा.

(लेखक भारत के उपराष्ट्रपति हैं.)

मालवा- निमाड़ की डायरी

नीमच नपा नेता प्रतिपक्ष को दिखाया आईना

संजय व्यास

नीमच नगर पालिका नेता प्रतिपक्ष योगेश प्रजापति को नगर पालिका अध्यक्ष के खिलाफ दायर याचिका में मुंह की खानी पड़ी है. मामला अध्यक्ष पद के वित्तीय और प्रशासनिक अधिकारों को लेकर था. याचिका में कहा गया था कि अध्यक्ष द्वारा बिना वैध गजट नोटिफिकेशन के वित्तीय और प्रशासनिक अधिकारों का उपयोग किया जा रहा है, जो मध्यप्रदेश नगरपालिका अधिनियम 1961 के प्रावधानों के विरुद्ध है.

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ के जस्टिस प्रणय वर्मा ने अत्याधिक देरी से न्यायालय में मामला लाने पर याचिका खारीज तो की ही साथ ही प्रजापति को आईना भी दिखा दिया कि इतना समय गुजर जाने के बाद उनकी आंख खुली. दरअसल नीमच नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति चोपड़ा के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई थी. जस्टिस प्रणय वर्मा ने अपने आदेश में स्पष्ट कहा याचिकाएं करीब 4 साल की देरी से दायर की गईं. याचिकाकर्ता अपने अधिकारों को लेकर निष्क्रिय रहे. इतनी देरी के बाद राहत नहीं दी जा सकती. कोर्ट ने तीखा रुख अपनाते हुए कहा कि जो लोग वर्षों तक अपने अधिकारों को लेकर सोए रहे, वे संवैधानिक राहत के हकदार नहीं हैं. साथ ही यह भी कहा गया कि अगर अब हस्तक्षेप किया गया, तो पिछले 4 साल में लिए गए वित्तीय और प्रशासनिक फैसलों पर असर पड़ेगा और प्रशासनिक अव्यवस्था पैदा होगी.

कोर्ट ने अपने विस्तृत आदेश में कहा गजट नोटिफिकेशन का मुद्दा पहले से न्यायालयों में उठ चुका है. कुछ मामलों में समय पर याचिका आने पर कार्रवाई भी हुई लेकिन देरी से दायर याचिकाओं को स्वीकार नहीं किया जा सकता. उल्लेखनीय है कि नगर पालिका के कार्यकाल के कुछ ही माह शेष हैं. 2027 में फिर चुनाव होंगे.

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग में बेकाबू व्यवस्था

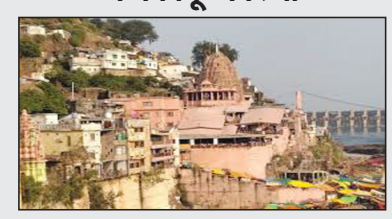

मालवा और निमाड़ में दो ज्योतिर्लिंग विशेष मायने रखते हैं. उज्जैन के महाकाल की व्यवस्थाएं तो उच्च श्रेणी की हैं, लेकिन ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के साथ सौतेलापन क्यों? यहां प्रदेश स्तर के प्रशासन द्वारा हैंडल क्यों नहीं किया जाता? खंडवा का जिला प्रशासन पूरी तरह व्यवस्थाओं के मामले में फेल हो गया है. वह आम लोगों को व्यवस्थित दर्शन भी नहीं करा पा रहा है. करोड़ों रुपए श्रद्धालुओं के द्वारा भेंट भी किए जाते हैं, सरकार भी देती है इसके बावजूद पैसा मनी ऑर्डर तथा ऑनलाइन पेमेंट का , कहां जा रहा है? नगर पालिका पर सीधे तौर पर लूट के आरोप लग रहे हैं. गंदगी भी साफ नहीं होती. प्रशासन ने आईएएस अफसरों को भी लगाया, पर वे ढंग से काम नहीं कर पाए. 20 प्रतिशत लोग मुख्य दिनों में बिना दर्शन वापस लौट रहे हैं. आस्था के नाम पर चलने वाले छोटी सी व्यवस्था नहीं कर पा रहे हैं.

श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं या लाठियां खाने?

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग में अव्यवस्था का आलम यह है कि जब-तब श्रद्धालुओं से प्रबंधन में लगे कर्मचारियों की मारपीट की घटनाएं सामने आती रहती हैं. ओंकारेश्वर मंदिर के कर्मचारी की खीझ साफ दिखती है कि हजारों किलोमीटर दूर से आने वाले श्रद्धालुओं से कैसा बर्ताव किया जा रहा है? ऐसी अप्रिय, कलंकदायी घटनाओं पर न कोई कार्रवाई और न ही सुधार होता है. यह बातें प्रबंधन की छवि ही बिगाड़ रही है व नाम खराब होता है ओंकारेश्वर का. इसमें जिले का प्रशासन पूरी तरह असफल दिखाई देता है. ओंकारेश्वर में रविवार को फिर मारपीट हुई. यहां तैनात कर्मचारियों ने लाठियां से भी दर्शन करने आए लोगों को पीटा. सवाल यह उठता है कि दूर-दूर से श्रद्धालु यहां भगवान ओंकारेश्वर के दर्शन करने आते हैं या लाठियां खाने? प्रदेश की सरकार को सिंहस्थ 2028 से पहले ओंकारेश्वर की 'बिगड़ैल' व्यवस्थाओं पर अंकुश लगाना होगा.

कमजोर मानसून व खाद संकट की चुनौती

मौसम वैज्ञानिकों ने इस वर्ष दक्षिण-पश्चिम मानसून के कमजोर रहने तथा औसत से कम वर्षा होने का अनुमान व्यक्त किया है. बारिश को लेकर व्याप्त अनिश्चितता के अलावा यह चिंता भी लगी है कि क्या सही समय पर किसानों को रासायनिक खाद उपलब्ध हो पाएगा? होर्मुज खाड़ी की नाकाबंदी के कारण पेट्रोलियम पदार्थों के साथ खाद की कमी का भी संकट झेलना पड़ रहा है. विश्व का 33 प्रतिशत रासायनिक खाद होर्मुज से होकर आता है. मार्च 2026 में भारत में खाद के उत्पादन में 24 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आई. जून के मध्य से कृषि सीजन शुरू हो जाता है. अभी देश में जितना यूरिया उपलब्ध है उसका चौगुना मंगाने पर कृषि क्षेत्र की जरूरतें पूरी हो सकती हैं. गत 8 अप्रैल को केंद्र सरकार ने खरीफ के लिए खाद में 12 प्रतिशत सब्सिडी बढ़ा दी. वैश्विक स्तर पर रासायनिक खाद के दाम बढ़ गए हैं. सरकार ने डीएपी (डायमोनियम फॉस्फेट) के खुदरा दामों को यथावत रखा है. सारे विश्व में खाद की कीमतें बढ़ रही हैं लेकिन किसानों की हालत देखकर सरकार रासायनिक खाद पर सब्सिडी जारी रखे हुए है. देखना होगा कि क्या केमिकल फर्टिलाइजर का घरेलू उत्पादन बढ़ाया जा सकता है? देश में बायोफर्टिलाइजर जैसे गोबर खाद, कम्पोस्ट को बढ़ाना होगा लेकिन ऑर्गेनिक खेती महंगी पड़ती है और अपनी शुद्धता के बावजूद ऑर्गेनिक खाद्य पदार्थ खरीद पाना निम्न आय वर्ग के लिए संभव नहीं रह गया है. संयुक्त राष्ट्र ने 2030 तक भुखमरी पूरी तरह समाप्त करने का लक्ष्य रखा है.

भारत में कुपोषणग्रस्त लोगों की तादाद 2006 में 243 मिलियन थी जो अब घटकर 102 मिलियन हो गई है लेकिन अब भी वैश्विक भूख सूची में दुनिया के 123 देशों में भारत 102 वें स्थान पर है. जून से सितंबर के बीच धान, कपास, तेलबीज की फसलें उपजाई जाती हैं. उसके लिए समय पर खाद मिलना आवश्यक है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

पेपर लीक, महंगाई के प्रति रोष इन दिनों चर्चा में कॉकरोच

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इन दिनों लोग स्टॉक मार्केट के बुल एंड बीयर की बजाय कॉकरोच पर चर्चा कर रहे हैं. ऐसा क्यों?'

हमने कहा, 'कॉकरोच को हिंदी में तिलचिट्टा कहते हैं. उसकी पहुंच झोपड़ी से लेकर महलों तक है. टीन-कनस्तर वाले के घर से लेकर मिनिस्टर के बंगले तक वह बेखटके डेरा जमा सकता है. किचन और सिंक उसका प्लेग्राउंड है. जहां कचरा वहां कॉकरोच ! कॉकरोच का कमर्शियल पहलू समझिए. जब तक कॉकरोच रहेंगे, उन्हें मारने वाला 'हिट' बिकता रहेगा. बॉयोलाजी पढ़ने वाले छात्र कॉकरोच पकड़कर लाते हैं और डिसेक्शन कर उनकी एनाटोमी समझते हैं. कॉकरोच का अस्तित्व लाखों वर्षों से है. कॉकरोच जुरासिक पीरियड अर्थात डायनासोर के समय से पृथ्वी पर मौजूद हैं. वह ब्लाटोडिया श्रेणी में आते हैं. मानव बस्तियों में कॉकरोच की 4,600 प्रजातियां पाई जाती हैं. जब किसी होटल-रेस्टोरेंट, ट्रेन या हवाई जहाज में दिए गए खाने की प्लेट में कॉकरोच निकलता है तो हंगामा मच जाता है

और अखबारों की खबर बनती है. थाईलैंड, ताइवान और मेक्सिको के लोग कॉकरोच का सिर व पैर काट देते हैं और उसे उबालकर या सेंक कर शौक से खाते हैं. कोरिया के वैज्ञानिक कॉकरोच से एड्स, कैन्सर व गंजेपन का इलाज करने वाली दवा बनाने पर रिसर्च कर रहे हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'कॉकरोच ने केंद्र सरकार को डरा दिया है. सोशल मीडिया पर करोड़ों फालोअर्स जुटाने वाली कॉकरोच जनता पार्टी या सीजेपी का एक्स अकाउंट बंद कर दिया गया है. नीट पेपर लीक, बेरोजगारी, महंगाई और तानाशाही के खिलाफ बनी इस पार्टी के सदस्य के रूप में 10 लाख लोगों ने पंजीकरण करवाया है. 6 लाख से ज्यादा लोगों ने केंद्रीय शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग करने वाली याचिका पर हस्ताक्षर किए हैं. इस पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके ने कहा कि सरकार कॉकरोच से इतना डरती क्यों है? आप हमसे इतनी आसानी से छुटकारा नहीं पा सकते.' हमने कहा, 'यह अभी सिर्फ सोशल मीडिया का आंदोलन है. इसे राजनीतिक पार्टी बनाकर चुनाव में उतारना हो तो इसके लिए चुनाव आयोग से मान्यता लेनी होगी. वैसे 'आप' के समान ही यह तेजी से बढ़ी पार्टी है. आम आदमी और कॉकरोच का हमेशा से सहअस्तित्व रहता आया है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12269 - डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. नंदी, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम (सं.) 5. साहूकार, धनी, भला आदमी 7. कामनायुक्त, इच्छुक (सं) 8. कण, दाना, सूजी 9. गुरुनानक के मत का अनुयायी 12. टेढ़ापन, दोष, ऐब 15. रमणीय, सुंदर, लाल रंग का 17. कुल, समग्र 18. हल्का नशा, मादकता 20. एकत्र, इकट्ठा 21. कर लगाना (टैक्सेशन) (सं.) 23. बहरा 24. नशीला. नशा उत्पन्न करने वाला

ऊपर से नीचे

1. शासन संबंधी (सं.) 2. रावण इस देश का राजा था 3. इच्छा, चाह (सं). 4. क्षारीय स्वाद के लिए भोज्य वस्तुओं में डाला जाने वाला एक पदार्थ, लवण 5. रथ चलाने वाला (सं.) 6. पवन, वायु 10. जिसका सिर झुका हुआ हो 11. कीच, कीचड़ 13. जल में डूबकर प्राण त्यागना, किसी वस्तु का जल में डूबकर नष्ट होना 14. चालचलन, व्यवहार (सं.) 16. सेना, फौज 18. एक बाजा 19. मूर्ति, प्रतिकृति, चांदी (सं.) 20. जिस समय, जिस वक्त 22. सुंदर स्त्री, लक्ष्मी, सीता

Solution 12268

शा	ह	रू	ख		स	मा	न
पा	रा		ल	क	ड़	दा	दा
ख		स	ना	त	न		र
	क	म		रा		प	द
नि	र	र्थ	क		शा	ह	
वे	त	न		अ	प	ल	क
द	ब		दु	म		बा	द
न		पो	ख	र		न	म

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिककार्यों में सफलता मिलेगी, नवीन योजनों का शुभारंभ होगा, वर्षके मध्यमेंतीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, राज सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी,वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, कार्यक्षेत्र में आकस्मिक रूकावटें आयेंगी, धन संकट का सामना करना होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं मेंवृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियोंको राजसम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को तीर्थ यात्रा करना होगी, धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक परेशनी से मन विचलित रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को साहस बना रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्ति यात्रा प्रवास के शौकीन होते हैं.

मेष- पारिवारिक मामले में आपसी सहमति से निर्णय करना लाभदायक, आकस्मिक धन लाभ होगा, सामाजिक कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

वृषभ- कोई लाभ की योजना हाथ से निकल सकती है, अपने खर्च,में कटौती करें, मानसिक सुख एवं प्रसन्नता रहेगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

मिथुन- साझेदारी में नया कार्य शुरू कर सकते हैं, दुविधा से बाहर निकलें, अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें, अतिथि आगमन होगा.

कर्क- नए संपर्क आगे बढ़ने में सहायक रहेंगे, लेनदेन के मामले सुलझेंगे, आर्थिक कार्यो में शिथिलता रहेगी, उदर विकार रहेगा, रक्त पीड़ा हो सकती है.

सिंह- व्यापार में नये सौदे हाथ में आ सकते हैं, कार्ययोजना में बदलाव होगा, पड़ोसियों से मधुरता के भाव रहेंगे, उच्च शिक्षा आदि में विशेष खर्च होगा.

कन्या- समय पर काम पूरा करने का दबाव रहेगा, साझेदारी टूटने का आसार हैं, भूमि संपत्ति के कार्यो में शिथिलता रहेगी, लापारवाही से कष्ट होगा.

तुला- प्रतियोगी परीक्षा में अच्छी सफलता मिलेगी, संतान के व्यवहार से दुख होगा, अध्ययन रचनात्मक कार्यो में रूचि बढेगी, मन में प्रसन्नता रहेगी.

वृश्चिक- लेनदेन के मामले में आरोप प्रत्यारोप लगेंगे, परिवार एवं परिश्रम के कार्यो में अनुकूलता रहेगी, समय के अनुसार निर्णय करना लाभकारी रहेगा.

धनु- विवादास्पद मामले सुलझनें के आसार हैं, कैरियर में बेहतर सफलता मिलेगी, व्यवसायिक प्रयासों में अनुकूलता रहेगी, मित्रों एवं प्रियजनों का सहयोग रहेगा.

मकर- मेहमान नवाजी में समय बीतेगा, जल्दबाजी में गलती कर बढेंगे, शारीरिक अस्वस्यता रहेगी, पारिवारिक तनाव दूर होगा, मानसिक संतुष्टि रहेगी.

कुम्भ- अनुशासन की कमी से व्यवस्था बिगड़ सकती है, मनमौजी रवैया से नुकसान होगा, दूर गये मित्र के संबंध में कोई सुखद समाचार मिलेगा, साहस से कार्य करें.

मीन- भागदौड़ सफल होगी, आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी, नवीन योजना बनेगी. राजकीय सहयोग बना रहेगा, मन:स्थिति संतुलित रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्पष्टवादी, अनुशासन प्रिय, महत्वाकांक्षी होगा, इसकी शिक्षा उत्तम रहेगी, नौकरी व्यापार दोनों में अच्छा लाभ होगा, एक से अधिक आय के साधन उपलब्ध होंगे, अनुकूल समय का लाभ उठाने में सक्षम रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

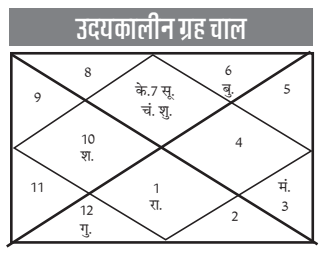

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल दशमीं भौमवासरे दिन 7/40, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे प्रात: 6/55, वज्र योगे प्रात: 6/14, गर करणे सू.उ. 5/18, सू.अ. 6/42, चन्द्रचार कन्या, शु.रा. 6, 8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल दशमीं को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, धातु, गुड़ खांड़, जौ, मटर, चना आदि वस्तुओं में मंदी होगी, शक्कर, अलसी, हींग, सरसों, अरड़ी, में तेजी का योग है,आज 11 बजकर 24 मिनिट से व्यापार करना लाभकारी रहेगा.

SUDOKU 7401

			2					4
			6					1
	5		8			2		3
		7					6	
	3					8		
1		6			3		7	
2					5			
8					4			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7400

6	5	4	3	1	9	7	2	8
7	2	3	5	8	4	9	6	1
8	9	1	7	2	6	3	4	5
1	7	2	8	3	2	5	9	4
4	3	8	9	6	5	1	7	6
5	6	9	4	7	1	8	3	2
2	8	7	1	4	3	6	5	9
9	1	6	2	5	7	4	8	3
3	4	5	6	9	8	2	1	7